झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अन्दर अपने चित्त।। ६६ ।।

इश्क, ताकत और कला झूठ में देखकर सच्चे का अनुमान लगाओ। अपने चित्त में इन तीनों को (झूठे संसार के और परमधाम के) इश्क, कला और ताकत को तौलकर देखो।

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल।। ६७ ।।

यह हमारा यहां का तन और अक्ल सब झूठे हैं। इन सबको देखकर विचार करो कि यहां कोई अखण्ड परमधाम की तुलना योग्य है?

अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत।
ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत।। ६८ ।।

अखण्ड परमधाम का नमूना कोई है ही नहीं। यह तुम दिल में विचारकर देख लो। झूठे संसार के पशु की ताकत देखकर अखण्ड परमधाम के पशु की ताकत को विचार लो।

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं नाहीं कित।
तो धनिएं देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत।। ६९ ।।

सच और झूठ में यही फर्क है जिसे कभी किसी ने नहीं जाना, इसलिए हम अर्श की रूहों को लज्जत देने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ही माया दिखलाई है।

विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत।
धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत।। ७० ।।

यहां खेल में बैठकर विचार करने से ही अखण्ड परमधाम की महिमा मालूम होती है तथा श्री राजजी महाराज और सखियों की महिमा जानी जाती है।

महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान।
बिध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान।। ७१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सखियों की यह पहचान है कि इनको परमधाम की वाणी तीर के समान लगती है।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। १२९२ ।।

पसु पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों का, कायम है सोहाग।। १ ।।

श्री राजजी महाराज इन पशु-पक्षियों के बीच खेलते हैं। यह बहुत भाग्यशाली हैं। परमधाम के जानवरों का अखण्ड सोहाग है।

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।। २ ।।

यह पशु-पक्षी परमधाम में सब जगह बसते हैं और रात-दिन श्री राजजी महाराज में ही इनका चित्त रहता है। यह अपने मुख से मीठी बोली में पीऊ-पीऊ और तूही-तूही बोलते हैं।

Nijanand App

जस नया जुबां जुदी जुदी, रात दिन रटन।
याही अंग इस्क में, छोड़त नाहीं खिन।। ३ ।।

रात-दिन श्री राजजी महाराज के नए-नए गुणों का गान करते हैं। इनके अंग इश्क के हैं जिसके कारण से यह एक पल भी धनी से जुदा नहीं होते।

खावंद के दीदार को, पसु और जानवर।
आवत हैं गुन गावते, अपने समें पर।। ४ ।।

अपने साहिब के दर्शन के लिए उनके गुण गाते हुए सभी पशु-पक्षी अपने समय पर आ जाते हैं।

किस्सा इनों के इस्क का, किन मुख कह्यो न जाए।
दीदार न होवे बखत पर, तो जानों अरवा देवें उड़ाए।। ५ ।।

इनका इश्क इतना बड़ा है जिसका बयान इस मुख से कहा नहीं जाता। यदि इनको समय पर दर्शन न हो तो लगता है कि यह मर जाएंगे।

अरवा इनों की ना छूटे, पर ऊपर होए बेहोस।
अंग अरवा क्यों छूटहीं, अन्दर धनी को जोस।। ६ ।।

अखण्ड परमधाम में यह मर तो सकते नहीं, क्योंकि इनके अन्दर धनी का जोश है, परन्तु ऊपर से बेहोश जैसे हो जाते हैं।

एक रोम न गिरे इनों का, हक नजर सींचेल।
आठों पोहोर अंग में, करत धनी सो केलि।। ७ ।।

यह श्री राजजी महाराज की नजरे-करम से पले हुए हैं और आठों पहर धनी का आनन्द लेते हैं, इसलिए इनका एक रोम भी नहीं गिरता।

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर।। ८ ।।

इनके वास्ते श्री राजजी महाराज करोड़ों रूप धारण करते हैं। यह पशु-पक्षी मन चाहे रूप में श्री राजजी का दर्शन करते हैं। श्री राजजी महाराज के यह ऐसे जबरदस्त आशिक हैं।

सो मैं कह्यो न जावहीं, जो इस्क इनों के अंग।
रोम रोम इनों के कायम, क्यों कहूं इस्क तरंग।। ९ ।।

इनके अंग ही इश्क के हैं। जिसको मैं कैसे बताऊं? इनके रोम-रोम अखण्ड हैं। उनमें इश्क की लहरें आती हैं।

एक इस्क धनी बिना, और कछू जानत नाहें।
खेलें बोलें गाएं लरें, सो सब इस्क माहें।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क के अतिरिक्त और यह कुछ नहीं जानते। इनका खेलना, बोलना, गाना, लड़ना सब इश्कमयी होता है।

Nijanand App

क्यों कहूं पसु पंखियन की, इनके इस्क को बल।
एक जरे को न पोहोंचहीं, इन अंग की अकल।। ११ ।।

पशु-पक्षियों के इश्क की ताकत को कैसे बताऊं? संसार के तन और बुद्धि परमधाम के एक कण मात्र का भी बखान नहीं कर सकती।

मैं देख्या अर्स के लोकों को, कोई अंग न बिना इस्क।
क्यों न होए गंज इस्क के, जित जरा नाहीं सक।। १२ ।।

मैंने परमधाम के सभी पशु-पक्षियों को देखा। इनमें कोई भी अंग बिना इश्क के नहीं है। इनके अन्दर गंजान गंज (ढेर का ढेर इश्क) होना ही चाहिए इसमें कोई भी संशय की बात नहीं हैं।

कह्यो क्यों ए न जावहीं, इन अंगों के इस्क।
कई कोट जुबां ले कहूं, तो कह्यो न जाए रंचक।। १३ ।।

इनके अंगों के इश्क की हकीकत लेखनी में नहीं आती। संसार की करोड़ जबान भी ले लें तो भी इनके इश्क का जरा भी बयान नहीं हो सकता।

जेता बल जिन अंग में, तेता इस्क हक का जान।
सक जरा ना मिले, पिउ सों पूरी पेहेचान।। १४ ।।

इन पशु-पक्षियों के अंग में जितनी ताकत है, वह सब श्री राजजी महाराज के इश्क की है। इन्हें अपने धनी की पूरी पहचान है। इनमें जरा भी संशय नहीं है।

पिउ की पेहेचान बिना, कछुए न जाने कोए।
जरा सक तो उपजे, जो कोई दूसरा होए।। १५ ।।

यह पशु-पक्षी धनी के अतिरिक्त किसी को नहीं जानते इनके मन में संशय तब हो जब किसी और को देखा हो।

इस्क पूरा इनों अंगों, और पेहेचान पूरन।
सब वजूदों एही रोसनी, कछू जानें ना हक बिन।। १६ ।।

इनके अंगों में पूरा इश्क भरा है और पहचान भी पूरी है। सबके तनों में ऐसा ही ज्ञान है। वह सब श्री राजजी महाराज के बिना किसी को नहीं जानते।

कछू कह्यो तो जावहीं, जो कछू जरा कहावे कित।
ब्रह्मांड तो खेल कबूतर, एक जरा न पाइए इत।। १७ ।।

वहां कुछ तो तब कहा जाए जो जरा-मात्र भी कुछ हो। यह सारा ब्रह्माण्ड तो खेल के कबूतर के समान है वहां की जरा सी चीज की उपमा के लिए यहां कुछ नहीं है।

ताथें अंबार इस्क के, इन जिमी सब जान।
हक का कायम वतन, सब अंग इस्क पेहेचान।। १८ ।।

इसलिए परमधाम की जमीन में इश्क के गंजान गंज (ढेर) हैं (भण्डार हैं)। यह श्री राजजी महाराज का अखण्ड प्यार है, इसलिए वहां सबके अंग-अंग में इश्क भरा है।

Nijanand App

एक जरा जो इन जिमी का, सो सब इस्क की सूरत।
आसमान जिमी जड़ चेतन, पेहेचान इस्क दोऊ इत।। १९ ।।

परमधाम की जमीन का एक-एक कण इश्क का है। आसमान, जमीन, जड़, चेतन सब इश्क के हैं और इनको धनी की पहचान है।

पार नहीं जिमीन को, और पार नहीं आसमान।
पार नहीं जड़ चेतन, पार ना इस्क रेहेमान।। २० ।।

यहां की जमीन, आसमान, जड़ चेतन में श्री राजजी महाराज का बेशुमार इश्क है।

छोटा बड़ा अर्स का, सो सब हैं चेतन।
पेहेचान इस्क अंग में, इन विध बका वतन।। २१ ।।

परमधाम में छोटा-बड़ा जो कुछ है, वह चेतन है और सब इश्क में ही चेतन हैं। ऐसा अखण्ड घर है।

जल में जीव बसत हैं, सो सुन्दर सोभा अमान।
फौज बांध आगूं धनी, खेल करें कई तान।। २२ ।।

जल के अन्दर जो प्राणी रहते हैं उनकी भी बेमिसाल सुन्दरता और शोभा है। वह भी अपनी टोली में (झुण्ड के झुण्ड) श्री राजजी महाराज के आगे आकर खेल करते हैं और बोलते हैं।

मच्छ कच्छ मुरग मेंडक, कई रंग करें अपार।
जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखत एक समार।। २३ ।।

मछली, कछुआ, मुर्गा, मेढ़क कई-कई रंग के बेशुमार हैं और अलग-अलग स्वरों में बोलियां बोलते हैं।

कई रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल।
जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल।। २४ ।।

यह कई रंग के पशु-पक्षी मीठे स्वरों में श्री राजजी महाराज का यश (गुणगान) गाते हैं और सदैव आपस में श्री राजजी महाराज की चर्चा करते हैं।

जीव छोटे बड़े कई जल के, अपने अपने ख्याल।
खेलें बोलें दौड़ें कूदें, खावंद को करें खुसाल।। २५ ।।

जल के छोटे-बड़े कई जीव अपने-अपने खेल में खेलकर, बोलकर, दौड़कर छलांग लगाकर श्री राजजी को रिझाते हैं।

अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम।
जल किनारे रटत हैं, पिउ जस आठों जाम।। २६ ।।

यहां जल के जानवर अनेक तरह के हैं कहां तक उनका नाम लेवें? यह रात-दिन श्री राजजी महाराज की मेहर (गुणों) को जल के किनारे बैठकर गाते है।

ए देखो नेक नीके कर, इनमें जरा सक नाहें।
क्यों न होए इस्क के अंबार, तुम विचार देखो दिल माहें।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम विचार कर देखो। इसमें जरा भी संशय नहीं है, इसलिए इनके अन्दर इश्क के भण्डार क्यों न हों?

Nijanand App

जो जरा इन जिमी का, तिन सब में इस्क।
ए चेतन इन भांत के, कछू जानें न बिना हक।। २८ ।।

इस जमीन की एक कण में भी पूरा इश्क भरा है। यह ऐसे चेतन कहलाते हैं कि श्री राजजी महाराज के बिना किसी को नहीं जानते।

पसु पंखी बन जिमिएं, तले ऊपर हैं जित।
क्या जाने मूढ़ मुसाफ की, रमूजें इसारत।। २९ ।।

पशु-पक्षी वन में, जमीन में, जल में, ऊपर, नीचे जहां भी हैं, इन कुरान की इशारतों, रमूजों को अज्ञानी क्या जानें? अर्थात् वह बेसुध होते हैं, वह ज्ञान को क्या समझें?

देखो अंबार इस्क के, या जड़ या चेतन।
जो कछू नजरों श्रवनों, सो इस्कै को वतन।। ३० ।।

जड़ में या चेतन में सब जगह इश्क का ही भण्डार है। यहां, जहां तक नजर जाती है या सुनाई पड़ता है, सब इश्क ही इश्क है।

दरखत करत हैं सिजदा, छोटा बड़ा घास पात।
पहाड़ जिमी जल सिजदे, इस्क न इनों समात।। ३१ ।।

यहां के वृक्ष, छोटी-बड़ी घास, पत्ते, पहाड़ जमीन, जल सब श्री राजजी महाराज को सिजदा करते हैं इनके अन्दर इश्क के ही भण्डार भरे पड़े हैं।

यों अर्स सारा इस्क में, एक जरा न जुदा होए।
खावंद सबों पिलावहीं, क्यों कहिए इस्क बिना कोए।। ३२ ।।

इस तरह से सारा परमधाम ही इश्कमयी है। इश्क के बिना कुछ और नहीं है। जिनको श्री राजजी महाराज इश्क की शराब पिलाते हैं, उन्हें इश्क बिना कैसे कहा जाए?

आसिक सबे इस्क में, या चांद या सूर।
या तारा या आकास, सब इस्कै का जहूर।।३३ ।।

परमधाम में चन्द्रमा, सूर्य, तारागण एवं आकाश सभी श्री राजजी महाराज के इश्क के ही रूप हैं।

जो सरूप इन जिमी के, सो सब रूह जिनस।
मन अस्वारी सबन को, आए पिएं प्रेम रस।। ३४ ।।

परमधाम में जितने भी रूप दिखाई पड़ते हैं वह सब परमधाम की रूहों की तरह चेतन हैं। यह मन के अनुसार तेज चलने वाली सवारी पर आकर श्री राजजी महाराज से इश्क का रसपान करते हैं।

सो भी रूह मन अर्स के, ए तूं नीके जान।
बल देख झूठे मन को, अर्स मन बल पेहेचान।। ३५ ।।

यह रूह और मन भी परमधाम के समझना। संसार के झूठे मन की शक्ति को देखकर अखण्ड परमधाम के मन की शक्ति को पहचानो।

Nijanand App

ए झूठ हक को न पोहोंचहीं, तो क्यों देऊं निमूना ए।
कछुक तो कह्या चाहिए, गिरो समझावने के।। ३६ ।।

संसार की किसी भी चीज की उपमा अखण्ड परमधाम को नहीं लगती, तो अखण्ड परमधाम की चीजों का बयान संसार में बिना नमूने के कैसे करूं? परन्तु रूहों को समझाने के वास्ते कुछ तो कहना ही है।

चारों तरफों अर्स जिमिएं, जो कोई हैं सूरत।
बखत पर दीदार को, मन वेगी पोहोंचत।। ३७ ।।

रंग महल के चारों तरफ जो कुछ भी दिखाई देता है वह मन की चाल की तरह श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए समय पर आ जाते हैं।

कोई दूर बसत हैं, सो दूर दूर से दूर।
सो भी जान कदमों तले, इन मन बल ऐसा जहूर।। ३८ ।।

कई दूर रहते हैं और कई उनसे भी दूर रहते हैं। परमधाम के मन की शक्ति ऐसी है कि वह एक क्षण में श्री राजजी महाराज के चरणों तले पहुंच जाते हैं।

इन जिमी की क्यों कहूं, जिनको नाहीं पार।
उत पार जो बसत हैं, इन मन बल को नहीं सुमार।। ३९ ।।

यहां की जमीन बेशुमार है। उसका वर्णन कैसे करूं? जो जमुनाजी के पार अक्षरधाम की तरफ बसते हैं, उनके मन की शक्ति भी उतनी ही बलशाली है।

जो कोई जहां बसत हैं, सो तहां से आवत।
समें—सिर दीदार को, कोई नाहीं चूकत।। ४० ।।

जो जहां भी रहते हैं, वह वहां से श्री राजजी महाराज के दर्शनों के वास्ते समय पर पहुंच जाते हैं। किसी से कभी भी भूल नहीं होती।

ज्यों मन एक निमख में, पोहोंचत पार के पार।
तो क्यों न पोहोंचे बका जिमी को, जिन मन बल नहीं सुमार।। ४१ ।।

जब यहां का मन एक क्षण में बहुत दूर पार के पार पहुंच जाता है, तो फिर परमधाम की अखण्ड जमीन के मन के बल की सीमा बेशुमार क्यों न हो?

दसों दिस बसत हैं, सब में खावंद बल।
रोम रोम अंग इस्क के, इन हक इस्कै के सींचल।। ४२ ।।

दसों दिशाओं में श्री राजजी महाराज के इश्क का ही बल फैला हुआ है। पशु-पक्षियों के अंग के रोम-रोम श्री राजजी महाराज के इश्क के सींचे हुए हैं।

कोई न निमूना पाइए, या इस्क या बल।
एह खिलौने तिनके, जो खावंद अर्स असल।। ४३ ।।

बिना इश्क की ताकत के यहां कोई भी नहीं पाया जाता। यह परमधाम के श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं।

Nijanand App

एक जरा कह्या जुबां माफक, इत अलेखे विवेक।
रूहें अर्स का बल अर्स के, जो हक जात हैं एक।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने अपने संसार की जबान से थोड़ा सा बताया है, पर परमधाम में इश्क की महिमा बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के अंग की जो सखियां हैं, उनकी शक्ति परमधाम में इश्क ही है।

ख्वाब बैठ इन अर्स में, हकें देखाया तुमको।
महामत कहे ए मोमिनों, पेहेचान लीजो दिलमों।। ४५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! संसार में बैठकर अखण्ड परमधाम के सुख श्री राजजी महाराज ने तुमको दिखाए हैं। इन्हें पहचान कर अपने दिल में धारण करना।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। १३३७ ।।

पसु पंखियों की अस्वारी

अस्वारी पसु पंखियन पर, धनी करत हैं जब।
जो जहां बसत हैं, सो आए मिलत हैं सब।। १ ।।

श्री राजजी महाराज जब पशु-पक्षियों पर सवारी करने की इच्छा ही करते हैं तो सभी पशु-पक्षी जहां रहते हैं, वहां से आकर पहुंच जाते हैं।

अस्वारी को रूहन को, जिन पर हुआ दिल।
तिन आगूं ही जानिया, सो आए खड़े सब मिल।। २ ।।

रूहें जिन पशु-पक्षियों के ऊपर सवारी करना चाहती हैं, वह पहले ही जान जाते हैं और सेवा में आकर हाजिर हो जाते हैं।

केसरी बाघ चीते हाथी, और जातें कई अनेक।
कह्या जीन बने अंग उत्तम, सो कहां लों कहूं विवेक।। ३ ।।

केशरी (सिंह), बब्बर शेर, चीते, हाथी और कई किस्म के जानवर अपनी पीठ पर बैठने की जीन (काठी) कसे हुए सेवा में हाजिर हो जाते हैं। इनकी हकीकत कहां तक बताएं?

कई बिध अस्वारी होत है, बुजरक जो जानवर।
जीन जुगत क्यों केहे सकों, जो असल बने इन पर।। ४ ।।

ऐसे बड़े सुन्दर जानवरों की सवारी की लीला होती है। उनके ऊपर सुन्दर काठियों की शोभा कैसे कहें? यह इनके अंग की ही शोभा है।

घोड़े पर राखत हैं, आकास में उड़त।
कमी करें ना कूदते, सुख अस्वारी के अतंत।। ५ ।।

घोड़ों के भी पंख होते हैं यह आकाश में उड़ते हैं। कूदने में किसी तरह की कमी नहीं करते। इस तरह से सवारी के सुख बेशुमार हैं।

Nijanand App